Vol 5 Issue 10 Nav 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

''आज की शिक्षण व्यवस्था का आईना रागदरबारी ''

पान्डेय जे. आर
कला शाखा , द.ग.तटकरे महाविद्यालय , माणगांव – रायगड.

प्रस्तावना :–

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में एक यर्थाथवादी उपन्यासकार के रूप में श्रीलाल भुक्ल का वि िाश्ट स्थान हैं। श्रीलाल भुक्ल बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार है। उन्होंने उपन्यास क्षेत्र में अपनी खास पहचान बनायी हैं। इन्होंने कई उपन्यासो को लिखा हैं। 'रागदरबारी' उपन्यास 1963 ई. मे लिखा एक बहुचर्चित उपन्यास हैं। भारतीय लोकतंत्र, भाासन प्रणाली, ि ाक्षा व्यवस्था, कानून न्याय व्यवस्था, मूल्य संक्रमण और विघटन, भ्रश्टाचार, अपराध, भोशण, बेराजगारी को लेकर उन्होने 'रागदरबारी' उपन्यास में वि ाद चित्रण किया हैं। भुक्ल जी बड़े ही निर्मम यथार्थवादी उपन्यासकार हैं।

रागदरबारी उपन्यास का कथा स्थान ि ावपालगंज हैं। उसका भी प्रमुख केन्द्र छंगामल इंटरमीडिएट कॉलेज हैं। वैद्यजी इसक प्रबंधक हैं। कालेज के प्रिंसिपल एक विद्वान व्यक्ति है किन्तु वैद्य जी सामने दुम हिलाने वाले कुत्ते हैं। कॉलेज की पढ़ाई से ज्यादा अन्य दुसरी बातो में ज्यादा रूचि हैं। प्रिंसिपल हमे ाा यही सोचते हैं कि खन्ना तथा उनके साथी अध्यापकों को किस प्रकार सबक सिखाया जाए।

वैद्यजी को दो बेटे है बड़ा बद्री पहलवान तथा दुसरा रूप्पन जी। बद्री पहलवान इलाके में पहलवान के नाम से प्रसिध्द है। अखाडे में पहलवानी के साथ–साथ और भी कई गैर कानूनी कार्य किये जाते है। रूप्पन एक भोहदा छात्र है जो पिछले तीन सालो से 10 वी क्लास की भोभा बढ़ा रहे है। छात्रो के लीडर है। अध्यापको के बीच तेज तर्रार युवा है। दुनिया भर की बुराई उनके अंदर समायी हुयी है। भारीर से तो कमजोर है परन्तु खुरपाती स्वभाव के है।

छंगामल कॅलेज के प्रिंसिपल पास ही के गॉव के है। हमे ाा कॉलेज अध्यक्ष को पकडकर चलने वाले है। दूर–दूर तक गावो में दो बातो के लिये प्रसिध्द है – पहला तो फर्जी नक ाा बनाकर कॉलेज के लिये ज्यादा से ज्यादा सरकारी पैसा खीचने के लिये तथा दुसरा चरम गुस्सा आने की द ाा में स्थानीय अवधी भाशा का इस्तेमाल करने के लिये। इस उपन्यास में वर्तमान ि ाक्षण व्यवस्था को जिक करते हुये लेखक ने कहा ''वर्तमान ि ाक्षा पध्दति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।'' साइंस के मास्टर मोतिराम आपेक्षिक घनत्व का सिध्दात आटे की चक्की की कमाई से तुलना करके छात्रो को समझाते है। उन्हें पढ़ाने से ज्यादा दिलचस्पी आटा चक्की की म ाीन में है। प्रिंसिपल जी कभी–कभी किसी अध्यापक को दो–दो क्लास को एक साथ पढ़ाने को कहते है। जब मालवीय जी असमर्थता जाहिर करते हैं तो उन्हे हेड क्लर्क समझाता है जैसे एक सरकारी बस बिगड़ जाती है तो सभी सवारियों को दूसरे बस में बैठा दी जाती है वैसे ही दूसरे दर्जे के लड़को को अपने दर्जे में बैठा लो। कॉलेज में खन्ना मास्टर इतिहास के लेक्चरर है। परन्तु प्रिंसिपल उन्हें अग्रेंजी भी पढ़ाने को कहते है। जब अग्रेंजी में बच्चे कुछ पूछते है तो मुँह घोड़ा जैसा लटक जाता हैं। ऊपर से प्रिंसिपल कहते है अग्रेंजी के क्लास में नियत्रंण नही, छात्र अ ालील पत्रिका पढ़ रहे है, ''क्लास को कन्ट्रोल नही कर पाते और चाहिये वाइस प्रिंसिपली। पढ़ाई–लिखाई में क्या रखा है। असली बात है डिसिप्लिन समझे, मास्टर साहब ?''

प्रिसिपंल जी अध्यापको को नैतिकता, भाान की उपदे ा देते है, और स्वयं कालेज छोड़कर वैद्यजी के 10 बजे सुबह ही जाकर बैठ जाते है वहा भंगरस दबाकर पीते है।

छंगामल इंटर कालेज की स्थापना का उद्दे य था दे ा के नव–नागरिको को महान आद ार्ो की ओर प्रेरित करने एव उन्हें उत्तम ि ाक्षा देकर राश्ट्र का उत्थान करने हेतु, तैयार करना है। कालेज की प्रबंध समिति में वैद्यजी का दबदबा है। गुटबन्दी के मामलो में दूसरे कालेजो के लोग वैद्यजी तथा प्रिंसिपल से राय लेने आते है। वैद्यजी पिछले चालीस वर्शो से अहोरात्र केवल गुटबन्दी के नाम अर्पित किये हुये है। रंगनाथ बद्री पहलवान से कालेज के बारे में कहता है ''मै तो देख रहा हूँ, यहॉ इन्सानियत का जिक ही बेकार

है।'' ऐसा ही खन्ना मास्टर के गुटवाले कालेज कमेटी के उपाध्यक्ष गयादीन के पास जाते है तथा उन्हें वैद्यजी तथा प्रिंसिपल के खिलाप आवाज उठाने को कहते है तो वे कुछ नही बोलते। जब खन्ना जी उन्हें नैतिकता का हवाला देते है तो गयादीन कहते है – ''नैतिकता का नाम न लो मास्टर साहब, किसी ने सुन लिया ते चालान कर देगा।''

प्रिंसिपल जी नये अध्यापको को जो नियुक्त करते है वे सब उनके रि तेदार है। इससे पता चलता है कि अध्यापक नियुक्ति में कितना भाई भतीजावाद चल रहा है। योग्यता की कोई सुनवायी नही है। पैसे और पहुॅच ही असली योग्यता है। आज की ि ाक्षण व्यवस्था में कुनबा परस्ती का बोलबोला है।

छंगामल कॉलेज में लड़को से हर महीने खेल की फीस वसूली जाती है भले ही कॉलेज के पास खेलकूद की मैदान नही। खेल टीचर के पास खेलकूद न होने के कारण दोनो मास्टरो के गुटो में घुसकर मजा लेना, समय पास करना यही काम रह गया है। प्रिंसिपल को भी इसमें बड़ा आराम नजर आ रहा है। क्योकि उनके कॉलेज में हॉकी टीमो में मारपीट नही होती। अनु ाासन की समस्या नही है। लड़को के मॉ–बाप भी खु ा है कि फीस देकर मुसीबत टल जाती है। लड़के भी खु ा है कि जितना समय खेल में गवांओ उससे कम समय में ताड़ी का एक कच्चा घड़ा पी जाएॅगे या दॉव खेलकर चार–छः रूपये कमा लेगे। वैद्यजी वैसे ही खु ा है कि कमी ान सीधे–सीधे उनके जेब में आ रही है। कालेज प्रबन्ध कमेटी के अध्यक्ष ऐसे लोगो को कमेटी का सदस्य बनाया है जो उनके खिलाफ कभी जा ही नही सकते। सिर्फ उनके हॉ मे हॉ मिलयेगे। उपाध्यक्ष गयादीन तो तमाम मुसीबतो के होते हुए भी वैद्यजी को ही अध्यक्ष बनाने को समर्थन देते है। कॉलेज कमेटी का चुनाव वैद्यजी गुंड़ो तथा लाठियो के दम पर जीतते है। रंगनाथ यह सब देखकर हैरान है। ज्ञान व भाांति का क्षेत्र अ ाांत बनता जा रहा है। वैद्यजी अपने विरोधियों को चुनाव कक्ष में पहुचने ही नही देते। एक पण्डित जी चुनाव देने के लिए आते हैं तो इलाके का दबंग गुंडा बलराम सिंह उनको पुलिया से ही भगा देते है और कहते है आपका वोट पड चुका है। वैद्यजी, रूप्पन, बद्री पहलवान अपने किराये के पहलवानों गुंडी, लडको को रा ते में लाठियो के साथ खड़े कर देते है। दुसरी तरफ कहते है मै तो अंहिसा का पुजारी हूॅ, सब भाांती से काम कीजिये। बलराम सिंह कालेज चुनाव के समय पुलिया पर बैठ जाता है। उदंड नौजवानो से कहते है – ''असली विलायती चीज है छःगोली वाली।'' प्रिंसिपल उन्हे देखकर कहते है – ''क्या कहने है आपके, क्या कहने है।'' ''मै अन्दर मीटिंग में रहता हूॅ, बाहर की आप सॅभालिएगा।'' '' ाान्ति से काम लीजिएगा।'' बलराम सिंह मुॅद्दो पर ताव देते हुये कहते है। ''सब भाान्ति ही है। यहॉ पचास–पचास भान्ती जॉघ के नीचे पड़ी है।'' प्रिंसिपल जी अपने को महात्मा गांधी से भी बड़ा अहिंसावादी मानते है। अपने उदंड छात्रो से कहते है 'जरा बेटा कॉलेज की पैकरमा करके देख आओ, हमारे आदमी ठीक से नाकाबन्दी किये है कि नही।'' बलराम सिंह वैद्यजी के विरोधियो को सड़क के पुलिया से ही डरा–धमकाकर वापस भेज देते है। कालेज का चुनाव हो गया। जय–जयकार होने लगी। महात्मा गॉधी की जय होती है क्योकि वैद्यजी गांधी मार्ग से फिर से अध्यक्ष चुने जाते है। कॉलेज के प्रिंसिपल जी वैद्यजी की जय–जयकार करते है और कॉलेज की भावी तस्वीर खीचते हुये बोलते है – ''अब देखिऐगा कॉलेज कैसे तरक्की करता है। धकाधक, धकाधक, धकाधक। तूफान मेल जैसा चलेगा।''

'रागदरबारी' उपन्यास में श्रीलाल भाुक्ल ने हिन्दुस्तान के पढ़े–लिखे लोगो पर करारा व्यग्यं किया है। उदाहरण के लिये आजकल के पढ़े लिखे लोगो को 'काइसिस ऑफ कां ास' की बीमारी हो जाती है। यह बीमारी उन्ही को होती है जो अपने को बुध्दिजीवी समझते है। वास्तव में ये लोग बुध्दि के सहारे नहि बल्कि आहार–निद्रा–भय–मैथुन के सहारे जीवित रहते है। इस बीमारी में मरीज मानसिक तनाव और निरा ाावाद में लम्बे–लम्बे वक्तव्य देता है। इस बीमारी का अंत कॉफी–हाउस की बहसो में, भाराब की बोतलो में, आवारा औरतो की बॉहो में, सरकारी नौकरी में और कभी–कभी आत्महत्या में होती है।

उपन्यास के रंगनाथ को भी इसी बीमारी का लक्षण दिखने लगा है। छोटे–छोटे पदो के लिये जब ऐसा किया जा रहा है तो बडे–बडे पदो के लिये क्या–क्या किया जाता होगा। रगंनाथ को लगता है कि वह डकैतो के किसी गिरोह में आ गया है। प्रिंसिपल जी इतिहास में एम.ए. किये है, उनसठ फीसदी अंक पाये है । वक्त की बात है कि वे यहॉ प्रिंसिपल है। नही तो आजकल थर्ड क्लास के लोग वि वविद्यालय में पढाते है। रंगनाथ भी घटिया डिवीजन नही पाया है तभी तो ि ावपालगंज आया है। कॉलेज के प्रिंसिपल का कहना है जैसे बुध्दिमता एक वैल्यू है वैसे ही बेवकुफी भी एक वैल्यू है। और वे इसीलिये बेवकूफ बने रहते है। रंगनाथ को समझाते हुये कहते है, ''तुम कुछ कहो तो हॉ भैया बहुत ठीक। और वैद्यजी कुछ कहे तो हॉ महाराज बहुत ठीक। और रूप्पन बाबू कुछ कहे तो हॉ महाराज बहुत ठीक। पहलवान जो कहे सब ठीक ही है।''

कालेज का प्राचार्य 10 वी फेल रूप्पन से डरता है, उसके आ ीवाद का मुहताज है। गवार बेईमान गुंडा पहलवान उसे सुझाव दे रहा है इससे पता चलता है कि कॉलेजो के उच्च पदाधिकारी भी कितने नैतिक दृश्टि से गिरे होते है। प्रिंसिपल वैद्यजी कॉलेज के अध्यक्ष ही नही सब कुछ है। वैद्य जी का पल्ला पकडे है तो बब्बर भोर बने है और सबसे जूतो से बात करते है। बुध्दिजीवी की एक निराली परिभाशा बताते है – 'कहलाते है बुध्दिजीवी। तो हालत यह है कि है तो बुध्दिजीवी पर विलायत का एक चक्कर लगाने के लिये यह साबित करना पड जाय कि हम अपने बाप की औलाद नही है तो साबित कर देगे। चौराहे पर दस जूते मार लो, पर एक बार अमरीका भेज दो–ये है बुध्दिजीवी'।

आजकल कॉलेजो मे गुटबाजी होना आम बात हो गयी है। रागदरबारी उपन्यास में इसे भी अच्छी तरह से चित्रित किया है। खन्ना मास्टर और प्रिंसिपल का आपसी झगडा इतना बढ़ जाता है कि मामला थाना कोर्ट तक पहॅूच जाता है वैद्यजी अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर थाना कोर्ट को अपने पक्ष में कर लेते है। रूप्पन के नेतृत्व में उदंड छात्र पुरे भाहर मे जूलुस निकालते है । कालेज का नाम खराब ही जाता है। इससे किसी को कोई मतलब नही है। न्यायधी ा महोदय दोनो पक्षो की बात सुनकर कह बैठे– ''यानी झगडा रोटियो और मछलियो को लेकर है।'' प्रिंसिपल अपने सहकर्मी को अवधी भाशा में खुलकर गाली देते हुये कहते है – ''हमारि तो यही राय है कि सारे खन्ना के हाथ–पॉय टूरवाय कै कौनौ नारा मॉ डारि दीन जाय, यहु न बनै तौ सारे का कान पकरि कै कॉलिज के बाहेर निकारि दियै, मारै चूतर पर चारि लातै और ....''

वैद्यजी बहुत बड़े हस्ती है। खन्ना व मालवीय जी गयादीन से सहायता मागते है तो गयादीन कहता है – 'प्रिंसिपल साहब और बैद महाराज के पास बहुत बड़ी ताकत है। चौपट हो जाओगे। इम्तहान के दिनो में हर साल न जाने कितने मास्टर लड़को के हाथो पिटते है, तो क्या कर लेते है?'' अदालत जाने पर न्यायधी ा कहता है – ''अध्यापक होकर भी आप लोग लोफरो की तरह लड़ते है। 107 का मुकदमा चलने की नौबत आ गई है। आप लोगो को इसमें भार्म नही आती ।''

भाई भतीजावाद में वि वास करने वाले वैद्यजी अपने चमचे प्रिंसिपल को निर्दोश ठहराते हुए कहते है कि अब तो मुझे एक ही मार्ग दिखाई देरहा है और आपको उसी पर ही चलना है। ''खन्ना जी और मालवीय जी, मै औरो से नही कहता, केवल आप से कह रहा हूॅ आपको इस्तीफा देना होगा।''

इस प्रकार वैद्यजी दोनो अध्यापको को इस्तीफा देने के लिए विव ा और मतबूर करते है और खन्ना की जगह पर अपने भानजे रंगनाथ को नौकरी का रा ता बना देते हैं। वैद्यजी की तरह प्रिंसिपल भी भ्रश्टाचारी व्यक्ति हैं। क्योकि उनको कालेज के विकास के बजाय सरकारी पैसो को खीचने में ज्यादा रस हैं। लेकिन कालेज के लिए वह कितना खर्च करता है यह पूछने वाला कोई नही हैं।

निष्कर्ष :–

'रागदरबारी' उपन्यास के उपर्युक्त विवरण को देखने से पता चलता है कि आधुनिक ि ाक्षण व्यवस्था में जितनी खामियॉ हो सकती है उन सभी का चित्रण 'रागदरबारी' में देखने को मिल जाती हैं। प्राथमिक ि ाक्षा हो या माध्यमिक, उच्च ि ाक्षा हो या रिसर्च सभी जगह भ्रश्टाचार का बोलबाला हैं। किसी से ईमानदारी की अपेक्षा नही की जा सकती। ऊपर से लेकर नीचे तक, नीचे से लेकर ऊपर तक ईमानदारी, योग्यता, सच की कोई कीमत नही हैं। हा एक कमी इस उपन्यास में रह गयी है, आज की ि ाक्षण व्यवस्था में जातिव्यवस्था तथा धर्म का चित्रण नही हो पाया। भाायद तत्कालीन समय मे यह उतनी भयावह नही रहा हो। एक दो जगह ि ाक्षा अधिकारी दलित बच्चो की पढ़ाई पर बुरे वक्तब्य देते दिखायी पडे हैं। तभी तो कालेज के उपाध्यक्ष गयादीन खन्ना मास्टर को कहते हैं – 'नैतिकता का नाम न लो मास्टर साहब। किसी ने सुन लिया तो चालान कर देगा।''

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1) रागदरबारी – श्रीलाल भाुक्ल।
2) आठवे द ाक के हिन्दी उपन्यास – डॉ. रामविनोद सिंह
3) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन द र्न – डॉ. सुमित्रा त्यागी।
4) हिन्दी उपन्यासो में मध्यवर्ग – डॉ. हेमराज 'निर्मम'
5) श्री लाल भाुक्ल के उपन्याओ में युग एवम् समाज – डॉ. प्रतीक्षा पटेल।
6) उपन्यास स्थिति और गति – चन्द्रकान्त बांदिवडेकर
7) आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास – डॉ. इन्द्रनाथ मदान
8) हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचन्द्र तिवारी।
9) हिन्दी उपन्यास : उत्तर भाती की उपलब्धियॉ – डॉ. विवेक राय।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org